PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 2, ISSUE 5

# अनूदित रचना ‘उचक्का’ का अनुवादपरक अनुशीलन

मार्गदर्शक
**प्रा.डॉ.वि.एन.भालेराव**
विभागाध्यक्ष
सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय,
पुणे —२००७ महाराष्ट्र (भारत)

शोधार्थी
**देशमुख प्रशांत पंडितराव**
शोधार्थी
सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय,
पुणे —२००७ महाराष्ट्र (भारत)

---

‘उचक्का’ यह अनूदित कृति मूल मराठी आत्मकथा ‘उचल्या’ का अनुवाद है। मूल आत्मकथा लक्ष्मण गायकवाड की है, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे ने मराठी से हिंदी में सन्, 1992 को अनूदित की है। ‘उचल्याश शब्द का अर्थ–चोरी करनेवाली जाति। इस जाति को समाज ने नकारा है। आत्मकथा के माध्यम से इस अंधश्रद्धा, जाति–पंचायत, स्त्रीयों का शोषण का यथार्थ, सजीव और विदारक परिस्थिति का वर्णन और विश्लेषण किया है। पूरी आत्मकथा महाराष्ट्र के मराठवाड़ा प्रदेश के चारो ओर घूमती है और भाषा प्रदेश की बोलीभाषा है।

आत्मकथा की भाषा आंचलिक होने के साथ ही जाति विशेष की भाषा है। अनुवादक ने दोनों के अंतर को न्याय देकर मानक हिंदी भाषा में अनुवाद किया है। जैसे–

| | मूल मराठी | हिंदी अनुवाद |
|---|---|---|
| 1. | कातावु | गालियाँ |
| 2. | गबाळ | सामान |
| 3. | बंडाळ | तकलीफ |
| 4. | कोलड्यास | सब्जी |
| 5. | गुरंदा | मुखबीर |

प्रस्तुत उदाहरणों में प्रथम द्वितीय और तृतीय शब्द ग्रामीण आंचलिक हैं। चौथा शब्द ‘कोलड्यास’ मराठी के ‘कोरडयास’ का अपभ्रंश है। गुरंदा’ के लिए मानक हिंदी में ‘मुखबीर’ शब्द है। यह समतुल्य अभिव्यक्ति है। ‘कातावणे’ क्रिया अर्थ गुस्सा करना है। जिस संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग हुआ था, वहाँ गालियाँ भी अभिप्रेत है। अनुवाद ने संदर्भ को केंद्र में रखकर उचित अनुवाद किया है।

आत्मकथा में गालियों का ज्यादा प्रयोग हुआ है। इसका कारन माहौल है । इल गालियों में माँ–बहन के यौन अंगों का संबध मनुष्य या प्राणी के साथ जोड़ा है। गालियाँ भावनिक इच्छा से प्रयुक्त हुई है। अनुवाद भावानुवाद किया है। जैसे–आयला–भैनचौद, कडू भाडया– भड़वे आदि। प्रसंग की तीव्रता

बढ़ाने के लिए या संदर्भगत आवश्यकता के लिए एक गाली के लिए कई गालियों का भी प्रयोग किया है। जैसे 'कडू' गाली का अनुवाद लफंगा, बदमाश, बेशर्म किया है। 'कडू' शब्द का अर्थ 'अनौरस' होता है। अनुवादक ने यहाँ भाव से ज्यादा प्रसंग को महत्त्व दिया है। अनुवादक अश्लील शब्दों से बचते हुए भी नजर आते है। जैसे–मायची गांड का अनुवाद 'खराब' किया है।

अनुवाद ने कुछ प्रसंगों में छेड़–छाड की है। इनके परिणाम स्वरुप कथा के प्रयोजन में परिवर्तन हुआ है।

मूल मराठी :

''एकदा आम्ही घरात आठ–नऊ दीस पाणी पिऊन उपाशी होतो. तवा बाबनं एक आना उसना आनून गूळ एक छटाक घेऊन आला आन् एका भगुण्यात त्या गुळाचं पाणी करून दादा, भाऊ, बाबा, भाभी, आण्णा, हरचंदा, मी, केसर वहिनी एवढयानी एक एक कप त्या गुळाचं पाणी बाबानं समद्यांना वाटून दिलं होतं. तवा बाबांच्या गळयाला पडून रडायचं मी समद्या उकंडयानी फिरायचं रापलेल्या कोया, चिचुके गोळा करून भाजून खायचे कधी–कधी दुसऱ्या गावाला दादा, बाबा जाऊन डुकराचं एखादं पिल्लू चोरून आणायचे. त्याला भाजून खायचं पोटात आग पडली तवा मी जात्यावरचे पाळू उचलून वर मीठ टाकून जातं चाटू चाटू खाल्तो.''

हिंदी अनुवाद :

''एक बार हम लोग करीब नौ दिन से भूखे थे। केवल पानी पीकर जी रहे थे। तब बाबा एक आना कहीं से उधार ले आया। एक छटाँक गुड़ लाकर एक बर्तन में काफी पानी डालकर उसमें गुड को उबाला गया। बाद में इस गुड़ के पानी को हम सबने पी लिया।

उस दिन बाबा हम सबको अपनी बाहों में लेकर रोया। उन दिनों मैं दिन–भर घूरे पर भटकता। इमली के बीज या आम की गुठलियों इकट्ठी करता और उन्हें भूनकर खाता। कभी–कभार बाबा या दादा किसी दूसरे गाँव जाकर सुअर के किसी पिल्ले को पकड़कर ले आते। उसे भूनकर सब लोग खा लेते। पेट की इस आग से परेशान हो मैं कई बार चक्की के दो पाटों पर नमक छिड़ककर उन्हें चाटता।''

प्रस्तुत उदाहरण में सावन के महीने में भूख से होने वाले हाल का वर्णन है। यह दृश्य बड़ा ही हद्यस्पर्शी है। भूख के कारण परिवार की हालत और भूख मिटाने के लिए चोरी और घूरे पर फेंकी चीजों के खाने का वर्णन है। अनुवादक ने इस दृश्य को दो अनुच्छेद में बाँटा है। इससे पाठक को दो अलग–अलग अनुभव को स्पष्टता से विभाजित करने से समझने में आसानी होती है।

अनुवादक ने मूल रचना के कुछ हिस्सों में बदलाव किया है। जब भूख लगती तब उस गुड़ का एक–एक कप पानी ही हिस्से में आता। यहाँ 'एक–एक कप' शब्द महत्वपूर्ण था। 'एक कप' से यह स्पष्ट होता कि आठ दिन से भूखे के लिए वह कितना कम है। अनुवादक ने उसे हटा दिया है। मूल रचना में

बाबा नहीं अन्य परिवार के सदस्य रोते थे। पर अनुवादक ने ‘बाबा रोता’ अनुवाद किया है। यहाँ भाव में परिवर्तन होता है। बाबा ने ऐसे दिन ज्यादा देखने के कारण उसके आँखों से आँसू नहीं आए, पर बच्चे छोटे होने से उन्हें यह दिन कम देखने के लिए मिले थे। बाबा के रोने से अर्थ परिवर्तन हो जाता है। अनुवादक को ऐसे परिवर्तन से बचना चाहिए।

आत्मकथा में परिवेश को उभारने का प्रयास नहीं किया। आत्मकथा में मनुष्य के आपसी सहसंबंध, समान रचना और उससे उभरनेवाली अन्यय की व्यवस्था उससे उभरनेवाली अन्याय की व्यवस्था को उभारा है। दलित जीवन की भाषा और सवर्णा की भाषा में भी भेद होता है। सवर्ण उस भाषा के कई शब्दों से अपरिचित होते हैं। अनुवाद ने ऐसे शब्दों के लिए शब्दानुवाद कर वाद टिपण्णी, व्याख्या आदि का सहारा लिया है। सवर्णां का इन शब्दों से परिचित कराने में सफलता पाई है। जैसे

| | मूल रचना | अर्थ | हिंदी अनुवाद |
|---|---|---|---|
| 1. | तिरगाया | चोरी | तिरगाया |
| 2. | संतामुचलर | प्रशिक्षक | संतामुचलर |
| 3. | चप्पूल मुठल | चप्पल चोर | चप्पल मुठल |
| 4. | तुठेवारी | ठग | उठेवारी |
| 5. | पड्ड् घालणे | | पड्ड् घालने |

आत्मकथा का केद्रीय भाव ‘भूख’ होने से रसोईघर से जुड़े शब्दों का आना स्वभाविक है। रसोईघर से जुडे शब्दों का अनुवाद चुनौतीपूर्ण काम होता है। भारत जैसे विशालता और विविधता वाले देश में यह अधिक क्लिष्ट बन जाता है। आज पर्यटन, दूरदर्शन, दो प्रदेशों के संवाद हिंदी–मराठी भाषी एक–दूसरे को खाद्य संस्कृति से परिचित हो रहे है। ऐसे शब्दों के अनुवादक ने शब्दानुवाद का सहारा लिया है। जैसे पुरन–पोळी का अनुवाद पुरन–पोली। ऐसे कई शब्द है, जो दोनों प्रदेश की असमान है, जिनका अनुवाद असंभ्भव है। जैसे खारुड्या। यह पदार्थ ज्वार और बाजरें से बना सामान्य पदार्थ है। लेखक उसे भी माँग कर जाता था। अनुवादक ने ‘अन्य चीजें अनुवादश किया है। यहाँ अर्थ–संकोच हो जाता है। इसी लिए रसोईघर के शब्दों का अनुवाद दुरुह, चुनौतीपूर्ण होता है।

संवाद से कथानक को गति दी है। इन्ही संवादों द्वारा पात्रों, घटनाओं, चरित्रों का विकास किया है। यह शैली मन की स्थिति को व्यक्त करने के लिए सहायक है। इससे कथा में नाटकीयता आई है।

मूल रचना :

“मला पोलिसांनी इचारले, “ए पाथरुटाच्या पोरा, चल तुझ्या घरी मानक्याला बगू” त्येनी मला घराकडं घिऊन आले. तवर मायनं घरातले लुगडे, पांघरायचे उकंडयात पुरून ठिवली व्हती. पोलिसानी

आल्याबरोबर मायच्या लुगडयाला धरून वडले. सांग तुजा लेक मानक्या कुठं गेलाय म्हणून मायला बी पोलिस मारू लागले.

पोलिस मायकडं गेले अन् इचारू लागले, ''ये रांड तुझ्या आंगावर येवडी भारी साडी कुठली आणली? या साडीची पावती आहे का? माय म्हणाली, ''साहेब, लई दिवस झालं घिवून, पावती कुठं हाय की, मला माहीत न्हाई'' मग पोलीस मायला म्हणून लागले, ''साडीची पावती दाखव न्हाई तर साडी फिडून दे.''

हिंदी अनुवाद :

''ऐ, पाधरूट के लौंडे अब तेरे घर चलना है। वहाँ मानक्या को देखते हैं।'' वे मुझे घर ले आए। पुलिस वालों की खबर माँ को लग चुकी थी। इस कारण झोपड़ी में रखीं साडियाँ और ओढ़नी की चादरें वह कचरे के ढेर में छिपा चुकी थी। पुलिस झोपड़ी में घुसी और साड़ी की छोर पकड़कर माँ को पीटने लगे। ....पुलिस माँ के पास गई और पूछने लगी, ''ऐ रॉड, तेरे बदन पर इतनी कीमती साड़ी कहाँ से आई। इस साडी की रसीद दिखा।'' माँ रोते हुए बोली, ''साहब, बहुत दिनों पहले मैंने इसे खरीदा है। रसीद कहीं खो गई है। अब कहाँ से लाऊँ?'' पुलिस कहने लगी, ''साड़ी की रसीद दिखा, नहीं तो साड़ी निकाल कर दे।''

प्रस्तुत उदाहरण संवाद शैली का अच्छा उदाहरण हैं पुलिस के संवादों में अधिकार और रौब है, तथा माँ के संवादों में दीनता और हीनता। मूलरचना और अनूदित रचना में दोनों भाव उभरकर आते हैं।

सारांश रुप में यही कहा जा सकता है, डॉ. सूर्यनारायण रणजुभे जी ने समतुल्य अभिव्यक्ति दी है। ग्रामीन और बोली भाषा के शब्दों को अनुवाद करते समय सजगता अपनाकर मानक हिंदी में अनुवाद किया है। पूरे अनुवाद में अनुवादक अश्लील शब्दों से बचना चाहा है। अनुवाद ने कई जगह कथा में छेड–छाड करने से अर्थविस्तार, अर्थसंकोच और अर्थ परिवर्तन को स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं।

## संदर्भ ग्रंथ

1. उचल्या, लक्ष्मण गायकवाड, श्रीविद्या प्रकाशन, पुणे. संस्करण–2011
2. उचल्या–अनु. सूर्यनारायण रणसुभे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2001
3. अनुवाद कला–डॉ भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–1998
4. अनुवाद मूल्य और मूल्यांकन– शशी मुदगल, रुजिर प्रकाशन, नागपुर, संस्करण 1988
5. अभिनव शब्दकोश –श्रीपाद जोशी, शुभदा सारस्वत प्रकाशन, पुणे, संस्करण 1999
6. भाषा विज्ञान–भोलानाथ तिवारी किताब महल, इलाहाबाद, सस्करण 2001
7. समानश्रोत और भिन्न वर्तनी शब्दावली–डॉ. अंबादास देशमुख, अतुल प्रकाशन, कानपुर, संस्करण–2002